फिल्म निर्माता विवेक अग्निहोत्री ने अपने जीवन का उदाहरण देकर छात्रों का बढ़ाया हौसला

रायपुर। नईदुनिया प्रतिनिधि

बालीवुड के जाने-माने फिल्मकार विवेक अग्निहोत्री ने आइआइटी रायपुर के छात्रों से मुलाकात कीं। उन्होंने छात्रों से उनके कॅरियर के बार में विस्तार से चर्चा की। छात्रों से कहा कि सफलता के दो मंत्र महत्वपूर्ण क्यों माने गए हैं। कभी आप लोगों ने इस बारे में सोचा? सफलता का पहला मंत्र दृढ़ विश्वास के बीच अखंडता आपको अजेय बना सकती है। वहीं दूसरा मंत्र आपको हमेशा प्रभावित करने के बजाय व्यक्त करने पर ध्यान देने वाला बनाता है। इस दौरान अपनी बात की पुष्टि के लिए उन्होंने अपने जीवन के कॉर्पोरेट जगत और फिल्म निर्माण जगत दोनों को उदाहरण के तौर पर बताया। अहसास होना क्यों आवश्यक है? इसका उदाहरण देते हुए कहा कि मैं जीवन में जितनी सफलता हासिल किया हूं, वह खुद के भरोसे और अहसास के दम पर हासिल किया हूं। उन्हें खुद को अहसास हुआ कि वे विज्ञापन फिल्मों की वजह अगर फीचर

फिल्में बनाएंगे तो ज्यादा बेहतर काम कर सकते हैं और उन्होंने वही किया।

विवेक ने बताया कि फिल्म को बनाते समय एक ऐसा समय आ गया था, जब उन्हें लगने लगा था कि फिल्म कभी पूरी नहीं हो पाएगी। उस दौर में फिल्म के स्टार अनुपम खेर ने उन्हें फिल्म का उद्देश्य ध्यान में रखने का सुझाव दिया और समझाया कि अगर फिल्म देखने के बाद एक भी व्यक्ति बदलता है, तो फिल्म बनाने का उद्देश्य पूरा हो जाएगा।

हौसला बनाए रखने की दी सीख

अग्निहोत्री ने अपनी पुस्तक अर्बन नक्सल्स द मेकिंग ऑफ बुद्धा इन ए ट्रैफिक जाम और फिल्म को प्रकाशित करवाने के लिए किए गए संघर्ष के बारे में बताया। उन्होंने अपनी बात को दृढ़ विश्वास के साथ दोहराया, क्योंकि इस विश्वास के कारण ही उनकी पुस्तक को एक बड़ी सफलता मिली। अपने वक्तव्य के अंत में उन्होंने छात्रों से कहा कि जीवन में कभी डरें नहीं। क्योंकि डर दुश्मन के लिए एक सटीक हथियार होता है।

सफलता में बलिदान का महत्व

विवेक अग्निहोत्री ने जीवन में सफलता हासिल करने के लिए किस तरह से और कितने बलिदान करने पड़ते हैं, इस विषय पर भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि सफलता के लिए बलिदान कितना आवश्यक है? इसका उदाहरण उनकी फिल्म 'बुद्ध इन ए ट्रैफिक जाम' है। इस फिल्म को बनाने के लिए उन्होंने काफी परिश्रम किया। फिल्म से जुड़े सभी पक्षों को बड़ी मुश्किल से डिस्ट्रिब्यूशन के लिए उन्होंने राजी किया। इसके बाद भी फिल्म जेएनयू में स्क्रीनिंग के बाद एक आंदोलन के रूप में बदल गई।

Naiduniya, 21st Feb 2019, P.9